डॉ.पुष्पा वास्कर,
एम.ए.,एम.एड.,
पीएच.डी.
अधिव्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
कर्मवीर हिरे महाविद्यालय,
गारगोटी - ४१६ २०९
(महाराष्ट्र)

स्नातकोत्तर
अध्यापक,
हिन्दी शोध
निर्देशिका

` आशियाना`
जे.पी.नाईक नगर,
गारगोटी,
जिल्हा-कोल्हापुर ।

प्रमाणपत्र

मैं डॉ.पुष्पा वास्कर अधिव्याख्याता,हिन्दी विभाग, कर्मवीर हिरे महाविद्यालय, गारगोटी यह प्रमाणित करती हूँ कि एम.फिल (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध ` मन्नू भण्डारी के महाभोज उपन्यास में चित्रित समस्याएँ ` मेरे निर्देशन में बडे परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया गया है । जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । श्री. पाटील के शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

गारगोटी ।
दिनांक : : :१९९३ ।

(डॉ.पुष्पा वास्कर)
शोध- निर्देशिका

प्रख्यापन

मैंने ` मन्नू भण्डारी के ` महाभोज ` उपन्यास में चित्रित समस्याएँ लघु शोध-प्रबन्ध प्रा.डॉ.पुष्पा वास्कर जी के निर्देशन में शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल.(हिन्दी) उपाधि के लिए पूरा किया है । मेरा यह मौलिक शोध-कार्य है । यह लघु शोध-प्रबन्ध इस विश्वविद्यालय की या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए मैंने प्रस्तुत नहीं किया है ।

(पाटिल विजय एच.)
शोध छात्र

कोल्हापुर ।
दिनांक : / : /:१९९३ ।

अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमांक

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय - मन्नू भण्डारी व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय ।

द्वितिय अध्याय - महाभोज ` उपन्यास में राजनीतिक समस्याएँ

तृतीय अध्याय - ` महाभोज ` उपन्यास में सामाजिक समस्याएँ

चतुर्थ अध्याय - ` महाभोज ` उपन्यास में आर्थिक समस्याएँ

पंचम अध्याय - उपसंहार

संदर्भ ग्रन्थ सूची

प्राक्कथन

श्रीमती मन्नू मँडारी आधुनिक हिन्दी कहानी और उपन्यास साहित्य की एक सफल और अद्वितिय साहित्यकार है। हिन्दी - साहित्य के अन्तर्गत कहानी और उपन्यास की विधाओं को नए और आधुनिक रूप में प्रस्तुत करने वाली लेखिकाओं में श्रीमती मन्नू मण्डारी का नाम आदर से साथ लिया जाता है। इनकी कहानियाँ और उपन्यास लोकप्रिय बने हुये हैं। आज महिला साहित्यकारों में श्रीमती मन्नू मण्डारी प्रमुख स्थान और महत्व बना चुकी हैं।

एक विद्यार्थी तथा हिन्दी साहित्य प्रेमी होने के कारण मन्नू मण्डारी के उपन्यास तथा कहानियाँ पढने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। मन्नू जी का एक बहुचर्चित उपन्यास `महाभोज` पढकर मुझे ऐसा लगा कि इसके मर्म को जानना आवश्यक है। अत: मैंने महाभोज उपन्यास को ही अपने शोध प्रबन्ध का विषय बनाया।

जब मैंने मन्नू मँडारी द्वारा लिखित ` महाभोज ` उपन्यास अपने लघु शोध-प्रबन्ध का विषय निश्चित करना चाहा तब मुझे यह देखना भी आवश्यक लगा कि आजतक इस विषय को लेकर कितना संशोधन तथा ग्रंथ रूप में लेखन कार्य हुआ है। मेरी जानकारी के अनुसार मन्नू मण्डारी के उपन्यास साहित्य को विषय बनाकर एकमात्र पुस्तक प्राप्त है जो कि श्रीमती नंदिनी मिश्र द्वारा लिखित ` मन्नू मण्डारी का उपन्यास साहित्य` । मन्नू मण्डारी जी के कथा साहित्य को विषय बनाकर लिखि हुई चार पुस्तकें प्राप्त हुई जो निम्नांकित हैं --

(१) कथाकार मन्नू मँडारी - अनिता राजूरकर

(२) मन्नू मण्डारी का कथा साहित्य - प्रा.किशोर गिरडकर

(३) मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य - गुलाबराव हाडे

(४) मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन -
- ममता शुक्ल ।

अत: मैंने तय किया कि मन्नू भण्डारी जी के 'महाभोज' उपन्यास को लेकर कोई संशोधन नहीं हुआ है और उस में भी विशेषत: प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित समस्याओं का अध्ययन करना एक संशोधनात्मक देन साबित होगी ।

इस सिलसिले के दौरान कुछ प्रश्न सामने आ गये और उनके स्तर ढूँढना आवश्यक हो गया । वे प्रश्न इस प्रकार हैं --

(१) महाभोज उपन्यास में कौन-कौन सी समस्याएँ हैं ।

(२) महाभोज में चित्रित राजनीतिक समस्या का स्वरूप क्या है ?

(३) महाभोज में चित्रित सामाजिक समस्या का स्वरूप क्या है ?

(४) महाभोज में आर्थिक समस्या के चित्रण का स्वरूप क्या है ?

इन प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करते समय मैंने मन्नू भण्डारी का उपन्यास महाभोज में चित्रित समस्याओं को ढूँढने का प्रयास किया है ।

विषय व्याप्ति एवं मर्यादा की दृष्टि से इतना कहना पर्याप्त होगा कि एक ही लेखिका मन्नू भण्डारी जी के एक ही उपन्यास ' महाभोज ' में अंकित समस्याओं का स्वरूप ढूँढना ।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभाजित है । अत: इस समग्र विवेचन को मैंने निम्नांकित ढंग से प्रस्तुत किया है --

प्रथम अध्याय - मन्नू भण्डारी व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय --

प्रथम अध्याय में मन्नू भण्डारी के जीवन का सामान्य परिचय दिया है । उनका जन्म, शिक्षा, पारिवारिक जीवन, विवाह, साहित्य साधना के बारे का उल्लेख करते हुए उनकी विविध आयामी साहित्य रचना पर प्रकाश डाला है ।

इस प्रयास में एक विशेष उद्देश्य सामने रखा था कि, साहित्यकार की कृतियाँ को समझाते हुए उनके व्यक्तित्व का परिचय पाना अधिक आवश्यक है ।

दृवितिय अध्याय - ' महाभोज ' उपन्यास में राजनीतिक समस्यायें --

प्रस्तुत अध्याय में मन्नू भण्डारी के उपन्यास ' महाभोज ' में चित्रित राजनीतिक समस्याओं के चित्रण का स्वरूप अंकित किया है । इनमें प्रमुख समस्यायें निम्नांकित हैं ।

(१) भारतीय राजनीति एवं गांधीवाद और सांस्कृतिक मूल्य ।
(२) राजनीति एवं राष्ट्रनिष्ठा का ढोंग ।
(३) राजनीति एवं कफन खसोट गिद्ध ।
(४) राजनीति एवं स्वार्थांध नेता ।
(५) राजनीति एवं गुंडागर्दी ।
(६) राजनीति एवं आम जनता ।
(७) राजनीति एवं नौकरशाही ।
(८) राजनीति एवं नारेबाजी ।
(९) राजनीति एवं चुनावी दाँवपेंच ।
(१०) राजनीति एवं चापलूसी ।
(११) राजनीति एवं अंधविश्वास के शिकार नेता ।
(१२) राजनीति एवं शासन सत्ता ।
(१३) राजनीति एवं विरोधी दल ।
(१४) राजनीति एवं सत्तापरिवर्तन : आशा - निराशा ।
(१५) राजनीति एवं प्रचार माध्यम ।
(१६) महाभोज एवं समकालीन राजनीति ।

इन समस्याओं को देखने से पहले साहित्य और समाज के पारस्पारिक संबंध को देखा गया है ।

तृतीय अध्याय - ` महाभोज ` उपन्यास में सामाजिक समस्याएँ --

प्रस्तुत अध्याय में महाभोज उपन्यास में चित्रित सामाजिक समस्याओं का विवेचन किया गया है। इस अध्याय में प्रमुख सामाजिक समस्याएँ निम्नांकित हैं।

(१) महाभोज में शोषण।

(२) महाभोज में आतंकवाद।

(३) महाभोज में अन्याय और अत्याचार।

(४) पुलिस प्रशासन की रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार।

(५) आम आदमी की सामाजिक विवशता।

चतुर्थ अध्याय - ` महाभोज ` उपन्यास में आर्थिक समस्याएँ --

प्रस्तुत अध्याय में ` महाभोज ` में चित्रित आर्थिक समस्याओं का चित्रण किया है।

पंचम अध्याय -- उपसंहार।

यह अंतिम अध्याय है। महाभोज में चित्रित समस्याओं का लेखा-जोखा लेने के बाद जो निष्कर्ष हाथ लगे उन्हें उपसंहार के इस पंचम अध्याय में सार के रुप में रखा है।

इस शोध-प्रबन्ध के अंत में सहाय्यक ग्रन्थो की सूची भी जोड दी है, जो मुझे इस शोध-प्रबन्ध कार्य के सिलसिले में विशेष सहायक सिद्ध हुयी।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध प्रा.डॉ.सी.पी.ए.वास्कर जी के कृपापूर्ण निर्देशन में लिखा गया है। यह बात मेरे लिए विशेष गौरव की है। अपनी व्यस्तताओं के बावजूद सतत प्रेरणा और प्रोत्साहन देकर आपने मेरी सहायता की है। इस कार्य के संबंध में आयी हर कठिनाई में आपने मेरा साथ दिया। आपके इस स्नेह, प्रेरणा और आशीर्वाद का मैं सदैव ऋणी रहूँगा।

श्रध्देय डॉ.व्ही.के.मोरे (अध्यक्ष,हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर) और श्रध्देय डॉ.आनन्द वास्कर (अध्यक्ष,हिन्दी विभाग, कर्मवीर हिरे महाविद्यालय,गारगोटी) इनका आशीर्वाद मेरी अनेकों समस्याओं पर विजय प्राप्त करता रहा है । भविष्य में भी इन लोगों से आशीर्वाद तथा सहयोग की कामना करता हूँ ।

शिवाजी विश्वविद्यालय तथा कर्मवीर हिरे महाविद्यालय के ग्रंथालयीन सेवकों का भी मैं ऋणी हूँ । टंकलेखन का कार्य सुचारु रूप से करनेवाले श्री बालकृष्ण रामचंद्र सावंत,कोल्हापुर के प्रति मैं धन्यवाद प्रकट करता हूँ तथा आकर्षक बाईंडिंग करने में माहीर नवरंग प्रेस के मालिक तथा कर्मचारियों को भी मैं धन्यवाद देता हूँ । समय-समय पर मुझे प्रोत्साहित करने वाले सभी साथी एवं गुरुजनों के प्रति आभार प्रकट करते हुए मैं अपना यह लघु शोध-प्रबन्ध अवलोकन के लिए समीक्षकों के सामने प्रस्तुत करता हूँ ।

कोल्हापुर । (विजय हिंदुराव पाटील)

दिनांक : : :१९९३ । शोध-छात्र